



नगरीय महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का एक अध्ययन (रीवा नगर के विशेष सन्दर्भ में)

संदीप चौरशिया¹ and डॉ. शाहेदा सिद्दीकी²

शोध छात्र, (समाजशास्त्र)¹

प्राध्यापक, (समाजशास्त्र)²

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

शोध सारांश :

समाज के विकास के लिए नगरीय महिलाओं के सशक्तिकरण से प्रभावी तरीका कुछ नहीं हैं। दुनिया की 50 प्रतिशत आबादी नगरीय महिलाओं की है। "महिला सशक्तिकरण" की आठवें सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों में प्रमुखतः से शामिल किया गया है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि "जब तक महिलाओं की स्थिति नहीं सुधरती तब तक विश्व कल्याण की महिलाओं की कोई संभावना नहीं है। पक्षी के लिए एक ही पंख से उड़ना संभव नहीं है।" महिला विकास एवं आर्थिक सुधार द्वारा ही समाज सशक्त हो सकता है। स्वयं प्रधानमंत्री ने भी कहा कि "एक राष्ट्र हमेशा ही अपने यहाँ की महिलाओं से सशक्त बनता है। वह माँ, बहन और पत्नी की भूमिकाओं में अपने नागरिकों का पालन-पोषण करती है और तब जाकर ये सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपनी भूमिका निभाते हैं।" इस शोध पत्र को तैयार करने में अध्ययन क्षेत्र के रूप में रीवा नगर को चुना गया है। 50 उत्तरदाताओं का चयन सविचार निदर्शन के माध्यम से करके साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्य एकत्र किये गये हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका अति महत्वपूर्ण है।

मुख्यशब्द : महिला सशक्तिकरण, आत्म निर्भर, शैक्षणिक स्थिति, आदि।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. एंटोनोपोलस, आर (2009): द अनपेड केयर वर्क- पेड कनेक्शन (वर्किंग पेपर 86) पॉलिसे इंटिग्रेशन एण्ड स्टैटिक्स डिपार्टमेन्ट अन्तराष्ट्रीय श्रम कार्यालय, जिनेवा।
2. भट्टाचार्य, ए (2015) : केयर वर्क, कैपिलिस्ट स्ट्रक्चर एण्ड वाइलेंस अगेस्ट विमेन: नेशनल कन्वेंशन ऑन एडवोकेसी फॉर केयर वर्क नई दिल्ली में प्रस्तुत पेपर। महिला स्वाबलम्बन

3. घोष, जे (2015) : केयर इन दे नियो लिबरल इकनॉमिक मॉडल इंटरनेशनल पॉलिसीज एण्ड देयर इफेक्ट ऑन विमेन्स इन गर्ल्स अनपेड केयर-नेशनल कन्वेंशन ऑन एडवोकेसी फॉर केयर वर्क नई दिल्ली में प्रस्तुत पेपर।
4. कुरुक्षेत्र पत्रिका के विभिन्न अंक।
5. योजना पत्रिका के विभिन्न अंक।